कपिंग प्रक्रिया के विभिन्न चरण

सिंघी साधन

कप का उपयोग

घुटने के नीचे कप का उपयोग

पीठ पर कप का उपयोग

कप को हटाना

कृपया अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

महानिदेशक

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

61-65, सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058

दूरभाषः +91-11-28521981, 28520501, 28525831/52/62/83/97

फैक्सः +91-11-28522965

ई–मेलः unanimedicine@gmail.com • वेबसाइटः www.ccrum.net

संशोधित संस्करण : मई 2016 • 10,000 प्रतियाँ

इलाज बिल हिजामा

(कपिंग चिकित्सा)

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

इलाज बिल हिजामा क्या है?

इलाज बिल हिजामा (कपिंग चिकित्सा) यूनानी चिकित्सा पद्धति में विभिन्न रोगों की रोकथाम और उपचार में उपयोगी एक पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली है। *इलाज बिल हिजामा* में शरीर के किसी विशेष भाग पर कप लगाकर ख़ून का चूषण किया जाता है। पारिभाषिक शब्द *हिजामा* अरबी शब्द अल–हजम से लिया गया है जिसका अर्थ चूषण होता है।

कपिंग चिकित्सा में त्वचा की सतह पर कप लगाए जाते हैं और चुषण द्वारा उष्णता या ऋणात्मक दबाव पैदा कर रिक्तता (वैक्यूम) उत्पन्न की जाती है इस प्रक्रिया द्वारा ऊतकों से विकृत पदार्थ का निराकरण या अपवर्तन किया जाता है।

हिजामा के प्रकार

हिजामा को दो प्रकार में विभाजित किया जा सकता है – *हिजामा बिला शर्त* (शुष्क कपिंग) और हिजामा बिल शर्त (आर्द्र कपिंग)

***हिजामा बिला शर्त* (शुष्क कपिंग):** कपिंग के इस प्रकार में बिना ख़ून निकाले विकृत पदार्थ का अपवर्तन शरीर के एक भाग से दूसरे भाग की ओर कर दिया जाता है।

***हिजामा बिल शर्त* (आर्द्र कपिंग):** कपिंग के इस प्रकार में त्वचा की सतह पर एक तेज़ काट (खाँचा) रक्त स्राव हेतु लगाया जाता है और उस पर एक कप, रोग ग्रस्त भाग से दूषित पदार्थ को निकालने के लिए लगाया जाता है।

क्रियाविधि

- *तनक़िया अल–मवाद* (दूषित पदार्थों का निष्क्रमण) करता है
- *इमालात अल–मवाद* (दूषित पदार्थों का अपवर्तन) करता है
- प्रभावित भाग की रक्त आपूर्ति में वृद्धि कर ऑक्सीजन आप्लावन में परिणामिक वृद्धि का कारण बनता है
- स्थानीय सूजन को दूर कर लाक्षणिक आराम प्रदान करता है
- रक्त श्यानता (ख़ून का गाढ़ापन) कम करता है
- आवश्यक तत्वों के अवशोषण में वृद्धि करता है
- एपिडर्मल ग्रोथ फ़ैक्टर को क्रियाशील कर स्थानीय भाग में ए एम पी के परिणामस्वरूप संक्रमण और जीवाणु वृद्धि के प्रति रोगनिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है

प्रयोग

हिजामा चिकित्सा निम्न रोगों में प्रभावी है–

- *ज़ीक़ अल–नफ़स* (दमा)
- *उस्र अल–तनफ़्फ़ुस* (साँस में तंगी)
- *शकीक़ा* (माइग्रेन)
- *वज अल–असनान* (दंतशूल)
- *कुला* (मुँह में छाले होना)
- *ख़फ़क़ान* (स्पंदन)
- *सुदा* (सिर दर्द)
- बवासीर
- *इहतिबास–ए–तम्स* (मासिक धर्म में रूकावट)
- *कुलंज* (गुर्दे व मूत्रवाहिनी का दर्द)
- *वज–अल–मफ़ासिल* (जोड़ों का दर्द)
- *इर्क़ अल–निसा* (साइऐटिका)

कपिंग वेसल (चषकन पात्र)

कपिंग चिकित्सा में प्रयोग होने वाला पहला उपकरण जीवों का सींग था। ये सींग पीठ, उदर, जाँघ व टाँग जैसे शरीर के विशिष्ट अंगों पर रखे जाते थे। वर्तमान समय में सींग के स्थान पर विशेष तौर पर बनाए गए विभिन्न माप के गुम्बदनुमा काँच के कप प्रयोग किए जाते हैं। इन कपों में ऋणात्मक दबाव पैदा करने के लिए एक चूषण पम्प लगा होता है। इनमें एक वाल्व भी लगा होता है जिससे इनका शरीर भाग पर प्रभावी रूप से लगाया और हटाया जा सके।

प्रयोग विधि

***हिजामा बिला शर्त* (शुष्क कपिंग):** उपयुक्त आकार का एक कप चूषण पम्प/अग्नि द्वारा ऋणात्मक दबाव पैदा कर प्रभावित भाग पर 5 से 10 मिनट के लिए या वहाँ पर अतिरक्तिमा व संकुलता प्रकट होने तक लगाया जाता है। तत्पश्चात वाल्व द्वारा कप से दबाव हटाकर कप को हटा लिया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान सभी अपूर्तिक (जीवाणुरोधी) पूर्वोपाय किए जाते हैं।

***हिजामा बिल शर्त* (आर्द्र कपिंग):** आर्द्र कपिंग के दौरान कप में हल्का दबाव पैदा कर 5 से 10 मिनट तक प्रभावित भाग पर छोड़ दिया जाता है। फिर चिकित्सक कप को हटाकर एक ब्लेड द्वारा 0.1 मिमी. गहरे कई पृष्ठीय (सतही) काट लगाते हैं और कप को फिर से उस भाग पर लगा दिया जाता है। निस्यादिंत रक्त कप में एकत्र होना शुरु हो जाता है। दस मिनट पश्चात कप को हटाकर उस स्थान को भलीभाँति साफ़ कर जीवाणुरोधी मरहम से पट्टी कर दी जाती है।

इजाल बिल हिजामा कहाँ कराएँ

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद के अधीन देश के विभिन्न भागों में कार्यरत अनेक संस्थान/केन्द्र *इलाज बिल हिजामा* (कपिंग चिकित्सा) उपलब्ध करा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में, भारतवर्ष में मौजूद विभिन्न निजी चिकित्सालयों में भी यह चिकित्सा उपलब्ध है।